मियाज़ी हज़ाम की तीन कविताएँ

(1)

सोलुंग पर्व

सोलुंग ख़त्म हो गया है
चारो ओर फैले हुए हैं-उत्सव के अंतिम अवशेष,
तंबू के निशान
मंडप और पदचिह्न से भरा हुआ मैदान,
गूंजते मंत्रोच्चार,
मादक शराब और भुने हुए माँस,
सुडौल शरीर वाले पुरुष और सुंदर महिलाएँ,
जो हैं पहाड़ियों के देवताओं की संतानें,
प्रार्थनाएँ, अनेक अनुष्ठान और नृत्य
नेताओं और प्रशासकों के भाषण।

राणाघाट पुल के बगल में
मैं देखता हूँ आपका प्रवाह,
हे, शक्तिशाली सियांग!
आपका जल गवाह है
सुनहरे अतीत
समृद्ध वर्तमान और अदृश्य भविष्य का,
आपके बच्चे
आज विदेशी आस्थाओं को अपनाने लगे हैं,
समय का उतार और प्रवाह बदलता है
अपना रूप हर पल
जैसे आपके पानी का बदलता है रंग,
मटमैला लाल, पारदर्शी हरा और शांत नीला होना
कंक्रीट के गाने
कुकुरमुत्ते की तरह पनपते भोजनालय और
स्मार्ट सिटी के सपने,
घुमावदार पहाड़ों को काटकर
सड़क अब पक्की हो गई है,
हमारी पहली मुलाकात में
सड़कें शिशु थीं, और कल
हम विश्वदृष्टिकोण, सामाजिक आस्था और
आनुष्ठानिक प्रथाओं पर चर्चा कर रहे थे,
एक बंद कमरे में,
सभागार में सब उपस्थित, बैठे हुए थे मुख्य वक्ता,
संरक्षण, पुनर्निर्माण एवं प्रदर्शन पर बातें हो रही
थीं,
संस्कृति जो आज जीवित है,
अब इसी तरह विकसित और पुनर्नवा हो रही है।

(2)

जामुन का पेड़

पका हुआ जामुन, जो गिरते हैं
पुरानी छतों पर
रात और दिन से बेखबर होकर
कुछ विकृत आकृति बनाते हुए पड़े रहते ऊपर
जिसके नीचे लोग बैठते हैं शाम को, आग के पास
इकट्ठे।
उन फलों का पकना पतझड़ है,
पचासवीं सर्दी को झेलता एक आदमी
इधर-उधर घूमते,
हाथ में बाल्टी
(या कभी-कभी एक कटोरा)
गिरे हुए जामुन चुनते,
अपने बचपन वाले बगीचे में।
उन्हें बड़े प्यार से धोते और सुखाते हैं,
सर्दियों की शर्मीली धूप में

सिकुड़ी हुई यादें
तेल और मसालों के साथ संरक्षित
सर्दी को याद करने के लिए
चिलचिलाती गर्मी में
पककर गिर जाती हैं
इसी प्रकार सबको गिरना होगा एक दिन।

---

(3)

शरद का पुनःआगमन

पुनः आगमन हुआ ऋतु शरद का,
पीछे वाले आंगन में
गुड़हल की पत्तियों का हँसना,
लुका-छिपी खेलना
ढेर सारे फूलों के बीच
साल के आखिरी फूल का खिलना
प्रवासी पक्षी
इसकी शाखाओं पर तेजी से छलांग लगाती
जबकि
एक बिल्ली का बच्चा
वॉशिंग मशीन के ऊपर सोया हुआ है
आँख खोलता है और फिर सो जाता है।
एनएच 37,
सात ऋतुओं को मैंने
तुम्हारे नाम समर्पित कर दिया है।
शांत संध्या में छिटपुट बादल कभी-कभी
नीले आसमान चित्र बनाता है-
राक्षस और ड्रेगन की तैयारी का
देवी के स्वागत का
कभी-कभी नाव पर
कभी घोड़ा, तो कभी शाही हाथी पर
उत्सव के चार दिन
और फिर शांति,
फिर एक इंतज़ार
अमावस्या के लिए
हुई घोषणा काली के आगमन की,
रोनो हिल्स पर पंद्रहवीं शरद ऋतु
मेरी आत्मा मेरी सफेद मेज में समा गई
मैंने पत्तों को बदलते देखा है
पंद्रह साल तक,
लकड़ी में लपेटी आत्मा
जिसने मेरी दृष्टि अवरूद्ध कर दी है।
मेरी खिड़की के पीछे बन रही नई इमारत के नीचे
मैं हमेशा जाता हूँ
और
आसमान को रंग बदलते हुए देखता
और प्रतीक्षा करता
सर्दियों के लिए
जो हमें पुनः पल्लवित करने के लिए आने वाली है।

***

***(लेखकीय परिचय :** डॉ. मियाज़ी हज़ाम राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में प्रोफेसर हैं।*
मोबा:9436270177, ई-मेल : miazi.hazam@rgu.ac.in)